हि.प्र. विभागीय परीक्षा बोर्ड

विभागीय परीक्षा सत्र अप्रैल–2023

पेपर 2+4 हिन्दी (लिखित)

अंक–60

समय–2 घण्टे

नोटः– 1. सभी प्रश्न अनिवार्य है। कुल प्रश्न–7
2. प्रत्येक प्रश्न के अंक कोष्ठक में दिये गये है।

प्रश्न–1 **Translate into Hindi a passage in English**
(निम्नलिखित गद्यांश का अनुवाद हिंदी में करें।)

Optimism will change your life. If you expect your life to be a living masterpiece you will be happier, live longer and have all that this magical world can offer. Researchers studied 99 young Harvard men for the effects of optimism. By the time the study was published in 1988, the cheerier individuals were less affected with severe illnesses than their pessimistic counterparts.

Optimism can be learned. Every day, think deeply about all the good things you have in life. Everyone has something to be grateful for. The difference between optimists and pessimists is that the former look for and find the good in everything. A pessimist always sees and remembers the bad. For example, an optimist looks back on the day and smiles at the kindness he received, the good meals he ate, the family he is fortunate enough to have been surrounded by and the good health that he has enjoyed. A pessimist sees none of this and focuses on one or two challenges that may have appeared. He then concludes that this "was a bad day" and continues to brood over these minor difficulties for the rest of the day. In the wonderful little book, As a Man Thinketh, James Allen wrote: Let a man radically alter his thoughts, and he will be astonished at the rapid transformation it will affect in the material conditions of his life.

Good thoughts are guaranteed to lead to sunny circumstances. Optimism is an essential condition for success. Resolve to curb your wandering mind and start the habit of positive thinking today! Make certain every word you say is a good one, every thought you think is an inspiring one and every act you take an uplifting one.

(15 अंक)

प्रश्न–2 निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या सरल हिंदी में करें।

(Rendering into simple Hindi a passage in Hindi)

आवश्यकता के अनुरूप प्रत्येक जीव को कार्य करना पड़ता है। कर्म से कोई मुक्त नहीं है। अत्यंत उच्चस्तरीय आध्यात्मिक जीव जो साधना में लीन है अथवा उसके विपरित वैचारिक क्षमता से हीन व्यक्ति ही कर्महीन रह सकता है। शरीर ऊर्जा का केंद्र है। प्रकृति से ऊर्जा प्राप्त करने की इच्छा और अपनी ऊर्जा से परिवेश को समृद्ध करने का भाव मानव के सभी कार्यव्यवहारों को नियंत्रित करता है। अतः

आध्यात्मिक साधना में लीन और वैचारिक क्षमता से हीन व्यक्ति भी किसी न किसी स्तर पर कर्मलीन रहते ही हैं।

गीता में कृष्ण कहते हैं,'यदि तुम स्वेच्छा से कर्म नहीं करोगे तो प्रकृति तुमसे बलात् कर्म कराएगी।' गीता में कर्मों को ही सबसे उत्तम बताया गया है क्योंकि कर्म ही हमारे भाग्य का निर्माण करते हैं। अगर हम अच्छे कर्म करेंगें तो हमारे साथ अच्छा होगा अगर हम बुरे कर्म करेंगे तो उसका फल आनंदमयी नहीं होगा। आज जो कर्म हम कर रहे हैं परिपक्व होकर उनसे ही हमारे भाग्य की रचना होगी। हमारे भाग्य के निर्माता हम स्वंय ही है। जीव मात्र के कल्याण की भावना से पोषित कर्म पूज्य हो जाता है। इस दृष्टि से जो राजनीति के माध्यम से मानवता की सेवा करना चाहते हैं उन्हें उपेक्षित नहीं किया जा सकता। यदि वे उचित भावना से कार्य करें तो वे अपने कार्यों को आधात्मिक स्तर तक उठा सकते हैं।

यह समय की पुकार है जो राजनीति में प्रवेश पाना चाहते हैं, वे यह कार्य आध्यात्मिक दृष्टिकोण लेकर करें और दिनप्रतिदिन आत्मविश्लेषण, अंतर्दृष्टि, सर्तकता और सावधानी के साथ अपने आप का परीक्षण करें, जिसमें वे सन्मार्ग से भटक न जाएँ। राजेंद्र प्रसाद के अनुसार "सेवक के लिए हमेशा जगह खाली पड़ी रहती है। उम्मीदवारों की भीड़ सेवा के लिए नहीं हुआ करती। भीड़ तो सेवा के फल के बँटवारे के लिए लगा करती है जिसका ध्येय केवल सेवा है, सेवा का फल नहीं, उसको इस धक्का–मुक्की में जाने की और इस होड़ में पड़ने की कोई ज़रूरत नहीं है। जो निष्काम कर्म की राह पर चलता है उसे इसकी परवाह कब रहती है कि इसमें उसका क्या लाभांश है। जो भी कर्म प्रेम व सेवाभाव से किया जाए वह पूर्णरुप से संतोषदायक होता है व परमशक्ति की ओर ले जाता है। जैसे फूल व फल किसी भी प्रेरणा के बिना ही अपने समय पर वृक्षों में लग जाते हैं, उसी प्रकार पहले के किये हुए कर्म भी अपने फल भोग के समय पर उल्लंघन नहीं करते। **(10 अंक)**

प्रश्न–3 वित्त विभाग द्वारा निर्देशित नियमानुसार वित्त वर्ष के दौरान आबंटित बजट राशि का निर्धारित प्रतिशतता/सीमा के अनुसार चरणबद्ध रुप से व्यय किया जाना होता है परंतु कार्यालयों में प्रायः इसकी अनदेखी की जाती है जिस कारण वित्त वर्ष के अंत में सर्वाधिक वित्तीय बोझ का वहन करना पड़ता है। विभागाध्यक्ष द्वारा अधीनस्थ कार्यालयाध्यक्षों को वित्तीय नियमों में उल्लेखित वित्तीय औचित्य **(Financial Propriety)** व व्यय प्रतिशतता के मद्देनजर आबंटित बजट राशि का व्यय सुनिश्चित करने हेतु पत्र द्वारा निर्देश ज़ारी करें।

(10 अंक)

प्रश्न–4 निम्नलिखित शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें।

1. Absenteeism
2. Delinquent official
3. Absolve
4. Bad debt
5. Dry promotion
6. Exchequer
7. Bottleneck
8. Remission of revenue

(8 अंक)

प्रश्न–5 निम्न मुहावरों व लोकोक्तियों के अर्थ स्पष्ट कर वाक्यों में प्रयोग करें।

1. घर घाट एक करना।
2. अपनी करनी पार उतरनी।
3. अति भक्ति चोर के लक्षण।
4. एक ही थैले के चट्टे बट्टे।
5. आम के आम गुठलियों के दाम। (5 अंक)

प्रश्न–6 निम्न वाक्यों/शब्दों को शुद्ध रुप में लिखें।

1. वह बेफिजूल की बातें करता है।
2. आज बजट के ऊपर बहस होगी।
3. परिक्षण।
4. अगामी।
5. छायाप्रती।
6. स्वैछिक।
7. पूरणकालिक। (7 अंक)

प्रश्न–7 निम्न अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग करें।

1. जो उचित समय पर न हो।
2. जो मीठा बोले।
3. जिसका आचरण अच्छा हो।
4. जो हर जगह व्याप्त हो।
5. जो साफ साफ बात करे। (5 अंक)

हि.प्र. विभागीय परीक्षा बोर्ड

हिंदी (मौखिक)

पेपरः 2+4 परीक्षा सत्र अप्रैल–2023 अंक 40 समयः 1 घण्टा

Reading a passage & conversation (लेखांश का पठन व चर्चा)

राष्ट्रीय भावना के अभ्युदय और विकास के लिए भाषा भी एक प्रमुख तत्व है। मानव समुदाय अपनी संवेदनाओं, भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति हेतु भाषा का साधन अपरिहार्यतः अपनाता है, इसके अतिरिक्त उसके पास कोई अन्य विकल्प नहीं है। दिव्य ईश्वरीय आंनदाभूति के संबंध में भले ही कबीर ने 'गूँगे केरी शर्करा' उक्ति का प्रयोग किया था परन्तु इससे उनका लक्ष्य शब्द–रुपा भाषा के महत्व को नकारना नहीं था, प्रत्युत उन्होंने भाषा को 'बहता नीर' कहकर भाषा की गरिमा प्रतिपादित की थी।

विद्वानों की मान्यता है कि भाषा तत्व राष्ट्रहित के लिए अत्यावश्यक है। जिस प्रकार किसी एक राष्ट्र के भूभाग की भौगोलिक विविधताएँ तथा उसके पर्वत, सागर, सरिताओं आदि की बाधाएँ उस राष्ट्र के निवासियों के परस्पर मिलने जुलने में अवरोधक सिद्ध हो सकती हैं, उसी प्रकार भाषागत विभिन्नता से भी उनके पारस्परिक संबंधों में निबाधता नहीं रह पाती। आधुनिक विज्ञान युग में यातायात एवं संचार के साधनों की प्रगति से भौगोलिक बाधाएं अब पहले की तरह बाधित नहीं करती। इसी प्रकार यदि राष्ट्र की एक संपर्क भाषा का विकास हो जाए तो पारस्परिक संबंधों के गतिरोध बहुत सीमा तक समाप्त हो सकते हैं।

मानव समुदाय को जीवित, जाग्रत एवं जीवंत शरीर की संज्ञा दी जा सकती है और उसका अपना एक निश्चित व्यक्तित्व होता है। भाषा अभिव्यक्ति के माध्यम से इस व्यक्तित्व को साकार करती है, उसके अमूर्त, मानसिक, वैचारिक स्वरुप को मूर्त एवं बिंबात्मक रुप प्रदान करती है। मनुष्यों के विविध समुदाय हैं, उनकी विविध भावनाएँ हैं, विचारधाराएँ हैं, सकंल्प एंव आदर्श हैं, उन्हें भाषा ही अभिव्यक्त करने में सक्षम होती है। साहित्य, शास्त्र, गीत–संगीत आदि में मानव–समुदाय अपने आदर्शों, संकल्पनाओं, अवधारणाओं एंव विशिष्टताओं को वाणी देता है, पर क्या भाषा के अभाव में काव्य, साहित्य, संगीत आदि का अस्तित्व संभव है?

वस्तुतः ज्ञानराशि एवं भावराशि का अपार संचित कोश जिसे साहित्य का अभिधान दिया जाता है, शब्द रुप ही तो है। अतः इस संबंध में वैमनस्य की किंचित गुंजाइश नहीं है कि भाषा ही एक ऐसा साधन है, जिससे मनुष्य एक दूसरे के निकट आ सकते हैं, उनमें परस्पर घनिष्ठता स्थापित हो सकती है। यही कारण है कि एक भाषा बोलने व समझने वाले परस्पर एकानुभूति रखते हैं, उनके विचारों में ऐक्य रहता है। अतः राष्ट्रीय भावना के विकास के लिए भाषा तत्व परम आवश्यक है।

भाषा द्वारा ही राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है। राष्ट्र को सक्षम और धनवान बनाने के लिये भाषा और साहित्य की सम्पन्नता और उसका विकास परमावश्यक है। भाषा का भावना से गहरा संबंध है और भावना तथा विचार व्यक्तित्व के आधार हैं, यदि हमारे भावों

तथा विचारों को पोषक रस किसी विदेशी अथवा पराई भाषा से मिलता है तो निश्चय ही हमारी व्यक्तित्व भी भारतीय अथवा स्वदेशी न रहकर अभारतीय अथवा विदेशी हो जाएगा।
प्रत्येक भाषा व प्रत्येक साहित्य अपने देश काल और धर्म से परिचित तथा विकसित होता है, उस पर अपने महापुरुषों और चिंतकों का, उनकी अपनी परिस्थितियों के अनुसार प्रभाव पड़ता है। कोई दूसरा देश काल और समाज भी उस सुंदर स्वास्थ्यकारी संस्कृति से प्रभावित हो, यह आवश्यक नहीं है। अतएंव व्यक्ति के व्यक्तित्व का समुचित विकास और उसकी शक्तियों को समुचित गति अपने पठन पाठन में मिल सकती है। इसका कारण यह भी है कि मात्रभाषा में जितनी सहज गति से विकास संभव है और इसमें जितनी कम शक्ति, समय की आवश्यकता पड़ती है उतनी किसी भी विदेशी व पराई भाषा से संभव नहीं है।
मानवजाति के विकास के सिदीर्घ इतिहास में सर्वाधिक महत्व संप्रेषण के माध्यम का रहा है और वह माध्यम है भाषा। मनुष्य समाज की इकाई होता है तथा मनुष्यों से ही समाज बनता है। समाज की इकाई होने के कारण परस्पर विचार, भावना, संदेश, सूचना आदि को अभिव्यक्त करने के लिए मनुष्य भाषा का ही प्रयोग करता है।
वह भाषा चाहे संकेत भाषा हो अथवा व्यवस्थित ध्वनियों, शब्दों या वाक्यों में प्रयुक्त कोई मानक भाषा हो। भाषा के माध्यम से ही हम अपने भाव एवं विचार दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाते है तथा दूसरे व्यक्ति के भाव एवं विचार जान पाते हैं। भाषा ही वह साधन है जिससे हम अपने इतिहास, संस्कृति, संचित विज्ञान तथा महान परम्पराओं को जान पाते हैं।